राजस्थान सरकार

डॉ. भीमराव अम्बेड़कर फाउण्डेशन (अम्बेड़कर पीठ),

(सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग)

डॉ. भीमराव अम्बेडकर की स्मृति में संविधान दिवस के अवसर पर राज्य स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता

विषयः– "डॉ. भीमराव अम्बेडकर के आर्थिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता"

दिनांक – 06.04.2022 (समय– 2 घंटा, पूर्णांक– 100 अंक) RANK-I

कार्यालय उपयोग हेतु	मूल्यांकन हेतु
	64

विद्यार्थी का नाम – VINISHA PUROHIT

पिता का नाम – BHUPENDRA PUROHIT

महाविद्यालय/विद्यालय का नाम – GOVT. GIRLS COLLEGE RAJSAMAND

जिले का नाम – RAJSAMAND

Scanned with OKEN Scanner

राजस्थान सरकार
डॉ. भीमराव अम्बेडकर फाउण्डेशन (अम्बेड़कर पीठ),

राजस्थान सरकार
डॉ. भीमराव अम्बेड़कर फाउण्डेशन (अम्बेड़कर पीठ),

(सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग)
ग्राम– मूण्डला, पो. रूपवास, तहसील– जमवारामगढ़, जिला जयपुर 302027
E-Mail :- secretaryapj@gmail.com
www.ambedkarfoundationjaipur.in

2021

college level

डॉ. भीमराव अम्बेडकर की स्मृति में संविधान दिवस के अवसर पर राज्य स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता

विषयः– "डॉ. भीमराव अम्बेडकर के आर्थिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता"

दिनांक – 06.04.2022 (समय– 2 घंटा, पूर्णांक– 100 अंक)

कार्यालय उपयोग हेतु	मूल्यांकन हेतु
2702	64

Scanned with OKEN Scanner

डॉ० भीमराव अम्बेडकर के आर्थिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता

ऐ समय नदी की धारा, जिसमें सब जन बह जाया करते हैं।
लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो इतिहास बनाया करते हैं।।

प्रस्तावना

जैसा कि हम सभी यह भलिभांति जानते है कि 26 नवम्बर, 1949 को हमारा संविधान बाबा साहब अम्बेडकर की अध्यक्षता में बनकर तैयार हुआ। इसी कारण हम 26 नवम्बर संविधान दिवस के रूप में मनाते है।

आधुनिक भारत के निर्माता तथा सत्यकर्मयोगि अम्बेडकर भारत के प्रथम न्याय व कानून मंत्री, धर्म प्रचारक, महान राजनीतिज्ञ, दलित के उद्धारक होने के साथ

साथ अर्थशास्त्र के भी महान ज्ञाता थे।

अम्बेडकर के आर्थिक विचारों को 'अम्बेडकरीय अर्थशास्त्र' के नाम से जाना जाता है। आपने लन्दन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से अर्थशास्त्र में PH.D की उपाधि धारण की। अम्बेडकर ने आर्थिक विकास के लिये जो विचार दिये वे आज की परिस्थिति में भी अपनी उपयोगिता सिद्ध कर रहे हैं।

अम्बेडकर ने जिन मुख्य समस्याओं के समाधान पर विशेष दिया है वे छोटी जोतों की समस्या, चकबंदी, अनियंत्रित औद्योगिकरण, भू-सुधार आदि है। अब हम हमारे निबंध के मुख्य बिन्दु अम्बेडकर के आर्थिक सुधार तथा उनकी प्रासंगिकता का विशेष अध्ययन करेंगे।

अम्बेडकर के आर्थिक विचार

बाबा साहब अम्बेडकर अर्थशास्त्र के विद्वान थे. इस कथन में कोई दो राय नहीं है।

यदि भारत के सामाजिक व आर्थिक विकास की

बात हो तथा भीमराव अम्बेडकर की बात न हो, ऐसा संभव नहीं है। चूंकि अम्बेडकर ने सामाजिक तथा आर्थिक विषमता को बहुत करीब से देखा था; अतः उनके आर्थिक ~~विषमता~~ विचारों ~~के और~~ का पूर्ण उद्देश्य भारत को आर्थिक उत्थान की ओर ले जाना था। बाबा साहब के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता को निम्न बिन्दुओं द्वारा बताया गया है।

		राजकीय समाजवाद
विनिमय प्रणाली में स्थायित्व	आर्थिक	
		केन्द्र-राज्य वित्तीय संबंध
महिलाओं का उत्थान		
	विचार	कर नीति
विनिमय प्रणाली में स्थायित्व		
		L.P.G. मॉडल
संसाधनों का चरमतम उपयोग		
		जनसंख्या नियंत्रण के पक्षधर

Scanned with OKEN Scanner

राजकीय समाजवाद →

बाबा साहब अम्बेडकर राजकीय समाजवाद के पक्षधर थे। वे निजीकरण के विरोधी नहीं थे, परन्तु मूलभूत उद्योगों को निजी हाथों में देने के पक्षधर भी नहीं थे। वे कृषि को राज्य उद्योग का दर्जा देने की वकालात करते थे क्योंकि कृषि भारत की अर्थव्यवस्था का मूलआधार है। बीमा के राष्ट्रीयकरण की धारणा उनके विचार में थी। वे राज्य से यह आग्रह करते थे कि राज्य लोगों को मुआवजा देकर उनकी जमीन को समाज के सभी वर्गों में बाँट दे। अम्बेडकर अर्थव्यवस्था के पतन में भू-सुधार में देरी को सबसे प्रमुख कारण मानते थे।

कृषि, आधारभूत उद्योग, बैंक, बीमा आदि की जिम्मेदारी वे राज्य के कंधों पर डालते थे।

अम्बेडकर पूंजी, पूंजीगत

प्रासंगिकता
अम्बेडकर जी के राज्य समाजवाद की अवधारणा वर्तमान परिदृश्य में भी प्रासंगिक है। यदि हम बीमा बैंकों की बात करें तो कभी-कभी बीमा का कीस्त अचानक बढ़ जाता है जो इस विचार को न अपनाने का ही दुष्परिणाम है। कृषि को निजी हाथों में देने से कृषकों का भारी नुकसान होगा। सभी उद्यमी कृषकों से अपना हित साधने में लगे रहेंगे। यदि बाबा साहब जैसे लोग हमारे अर्थव्यवस्था का हिस्सा होते तो पिछले वर्षों में कई किसानों ने आत्महत्याएँ न की होती।

मात तथा श्रम को महत्वपूर्ण मानते थे। वे कहते थे कि पूंजी होती है परंतु किसान या श्रमिक जीता है। यदि हमें पूंजी पर धन खर्च ना करे तो हमे आमदनी तो नही होगी परंतु कोई नुकसान भी नही होगा। लेकिन यदि श्रमिक या किसान को कुछ न मिले तो अधिकतर समय उनके पास को आत्महत्या के बिना कोई विकल्प नहीं रहता। वे भू-जोतों के आकार को बढ़ाने के स्थान पर उनसे होने वाले पूंजीगत उत्पादन को बढ़ावा देने पर बल देते है। अपनी पुस्तक 'Small holdings in India and their remedies' में इन्होंने छोटी जोतों की समस्या तथा समाधान पर चर्चा की।

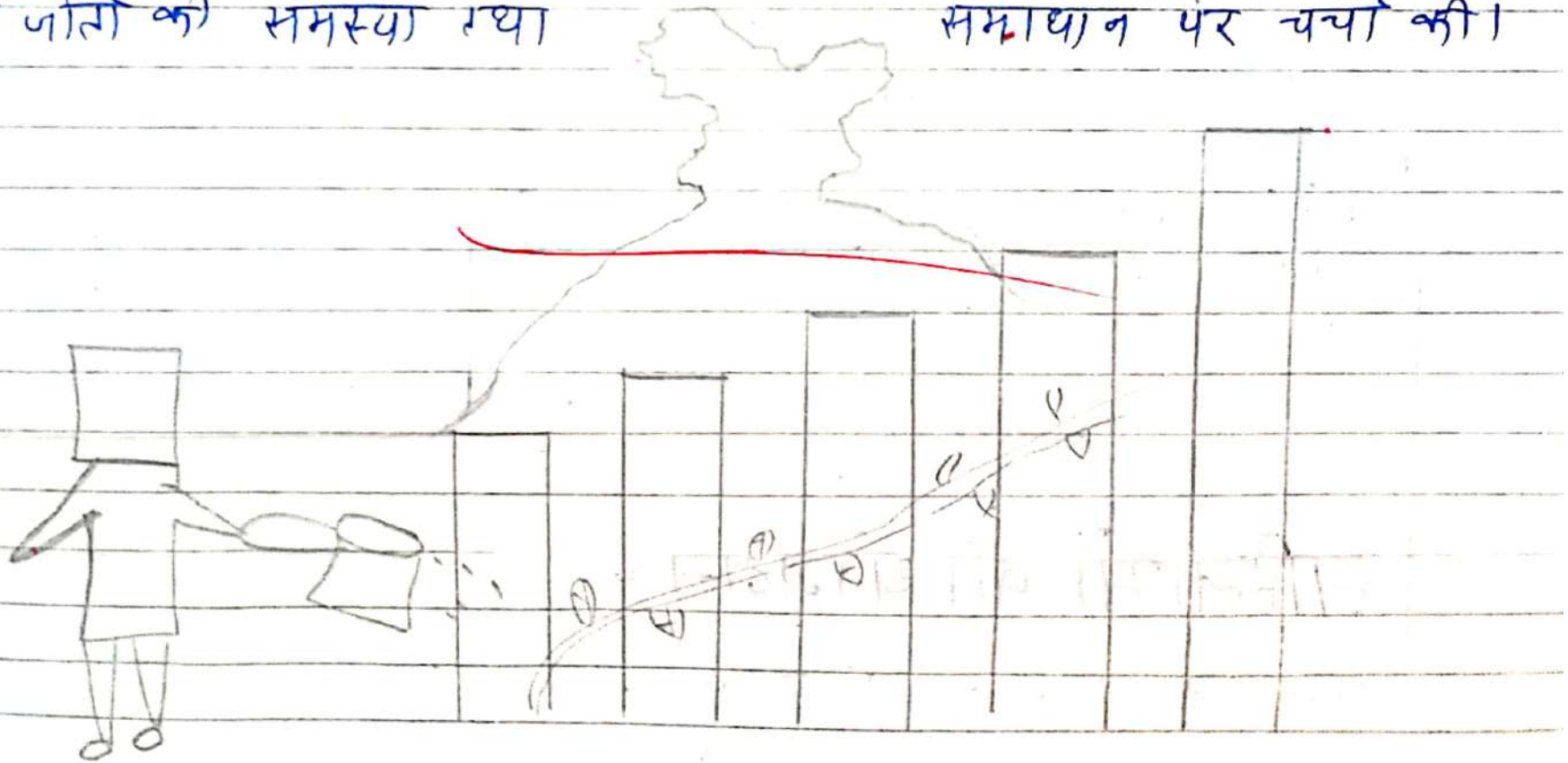

Scanned with OKEN Scanner

राज्य तथा केन्द्र के वित्तीय संबंध →

डॉ भीमराव अम्बेडकर ने उस काल में ही भारत में प्रचलित संघीय संसदीय प्रणाली के कारण होने वाले विवाद की संभावना को भांप लिया था इस विवाद की स्थिति में उन्होंने वित्त आयोग का विचार रखा। भारत में संघीय संसदीय प्रणाली (केन्द्र व राज्य में शक्ति विभाजन) के कारण कई बार विवाद की स्थिति देखी गयी है।

अम्बेडकर की कोलम्बिया विश्व-विद्यालय से 'राज्य तथा केन्द्र के वित्तीय संबंध' विषय पर P.H.D की उपाधि अर्थशास्त्र में उनकी विद्वता को दर्शाती है।

प्रासंगिकता

अम्बेडकर के विचारों के अनुरूप ही भारतीय संविधान में अनुच्छेद 268-293 के मध्य केन्द्र तथा राज्य के वित्तीय संबंधों को बताया गया है। अनु. 292 में वित्त आयोग का विवरण है।

महिलाओं का योगदान →

भीमराव अम्बेडकर सिर्फ मानव संसाधन मंत्र पर ही नहीं बल्कि

Scanned with OKEN Scanner

मानव में मानवीयता के उत्थान पर भी बल देते थे इसी विचार के फलस्वरूप वे भारत की आधी जनसंख्या अर्थात् महिलाओं के उत्थान की बात करते थे। उनका मानना था कि आधी जनसंख्या को घर में बैठाकर, अधिकार से वंचित रख कर आर्थिक उन्नति नहीं हो सकती है।

प्रासंगिकता

आज भी हमारे देश में ~~अनेक~~ चलाये जा रहे अनेक महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम तथा आरक्षण अम्बेडकर की ही देन है।

कर नीति →

- अम्बेडकर की कराधान के बारे में विचार भिन्न तथा प्रगतिशील थी।
- वे गरीब पर न्यूनतम तथा अमीर पर अधिकतम कर लगाकर सामाजिक समानता स्थापित करना चाहते थे।
- वे भूमि कर के खिलाफ थे।
- उनके अनुसार कर भूमि से या अन्य साधनों से होने वाली आय पर न लगाकर कर देने की क्षमता के अनुसार लगाया जाना चाहिये।
- उनके अनुसार कर नीति ऐसी होनी चाहिये जिससे समाज के सभी वर्ग बराबर खड़े रह सके।

Scanned with OKEN Scanner

प्रासंगिकता-

अम्बेडकर द्वारा दी गयी करनीति को वर्तमान परिदृश्य में अपनाकर हम ~~बस~~ आर्थिक उत्थान के शिखर पर पहुँच सकते है और साथ ही साथ सामाजिक तथा आर्थिक समानता भी बनी रही। इस प्रकार की कर नीति से देश तो उत्थान के पथ पर अग्रसर होगा ही साथ ही साथ कोई भी गरीब कर के बोझ तले नहीं दबेगा।

विनिमय प्रणाली में स्थायित्व →

बाबा साहेब अम्बेडकर का मानना था कि मूल्यों में उतार-चढ़ाव या अस्थिरता देश को आर्थिक पतन की ओर ले जाती है। जब 19 वीं सदी में आर्थिक मंदी पायी गयी, तब भी उन्होंने स्वर्ण प्रतिमान को स्वर्ण मुद्रा के साथ अपनाने को ~~ठीक~~ माना था परंतु नियंत्रण तथा संतुलन होने पर।

अपनी पुस्तक 'Problem of Indian Rupee: its origin and solution' में इन्होंने वैश्विक परिदृश्य में रुपये (भारतीय मुद्रा) के मूल्य की बात कही। अम्बेडकर विनिमय प्रणाली में अस्थायित्व को आर्थिक विकास के लिये नकारात्मक

सूचक मानते थे।

प्रासंगिकता

↓

यह विचार आज भी अपनी प्रासंगिकता स्थापित किये हुये है। वर्तमान में कभी भी मूल्य (रुपये का) में गिरावट दृष्टिगोचर होती है तो सामान्य जनता में भय का माहौल उत्पन्न होने की पूर्ण संभावना रहती है। अचानक मूल्य गिरने से शेयर बाजार भी अस्त-व्यस्त हो जाता है।

LPG मॉडल →

Liberalisation	Privatisation	Globalisation
उदारीकरण	निजीकरण	वैश्विकरण
उदारीकरण का तात्पर्य नियंत्रणों में छूट देने से है ताकि विकास आसानी से हो सके।	अम्बेडकर आधारभूत उद्योगों जैसे बीमा, बैंक, कृषि को छोड़कर अन्य उद्योगों के लिये निजीकरण के पक्षधर थे।	अम्बेडकर वैश्विकरण को उदार नीति के अन्तर्गत आर्थिक विकास के लिये आवश्यक मानते थे।

Scanned with OKEN Scanner

प्रासंगिकता
↓
बाबा साहेब की उदार नीति 20 के दशक में बीजारोपित, 50 के दशक में अंकुरित, 90 के दशक में पल्लवित तथा आज के डिजीटल युग में विकसित हुई।

बाबा साहब की ~~राष्ट्रीयकरण~~ नीति को आगे जाकर प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने भी अपनाया। भारत के प्रथम प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू से लेकर वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वैश्वीकरण को अपनी नीति का हिस्सा बनाया।

उदार नीति से पब्लिक सेक्टर अंडरटेकिंग में विकास तथा नये क्षेत्रों के सृजन में वृद्धि को देखा गया। यह पाया गया कि जब-जब उदार नीति को अपनाया, तब-तब आर्थिक विकास की दर में भी वृद्धि देखी गयी।

संसाधनों का चरमतम उपयोग →

बाबा साहेब संसाधनों के अधिकतम तथा चरमतम उपयोग पर बल दिया। वे चाहते थे संसाधनों का व्यय न हो। यदि

हम संसाधनों का चरमतम उपयोग करे तो कहीं हद तक सामाजिक तथा आर्थिक विषमता को समाप्त कर सकते है।

प्रा सं गि क ता → वर्तमान में यदि हम देखे तो 90% प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग, व दोहन नहीं हो पाता है। जिस कारण जनसंख्या का एक बड़ा तबका कई संसाधनों से वंचित रह जाता है तथा संसाधन का एक बड़ा भाग जनसंख्या के छोटे से वर्ग तक सीमित रह जाता है।

जनसंख्या नियंत्रण के पक्षधर →

जनसंख्या वृद्धि को आर्थिक विकास में बाधा मानते थे।
गरीबी का मुख्य कारण जनसंख्या तथा जनसंख्या का मुख्य कारण गरीबी है। जब कारण तथा उत्पन्न होने वाली चीज दोनों के पूरक तथा बाधक हो तो इसे अर्थव्यवस्था में कुचक्र कहते है।
उन्होंने कई परिवार नियोजन तथा नियंत्रण कार्यक्रम भी चलाये।

प्रासंगिकता -
अम्बेडकर के इस विचार की बात करे तो यह वर्तमान में

प्राचीन समय से भी ज्यादा प्रासंगिक है।

आज गरीबी, बेरोजगारी तथा बढ़ते हुये अपराध सभी का कारण अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि ही है। वर्तमान में चलाये जा रहे जनसंख्या नियोजन, नसबंदी कार्यक्रम, परिवार नियोजन आदि अम्बेडकर के विचार की प्रासंगिकता दर्शाते है। 'हम दो, हमारे दो' भी इसी विचार की उपज है।

यह सार्वभौमिक सत्य है कि जनसंख्या नियंत्रण होने पर हमारी आर्थिक उन्नति अधिक गति से होगी।

उपसंहार

हाल ही के नोबेल पुरस्कार प्राप्तकर्ता अमर्त्य सेन ने कहा है कि अर्थशास्त्र के विषय में अम्बेडकर मेरे पिता है। अम्बेडकर द्वारा दिये गये विचार वर्तमान में भी अपनी व्यवहारिकता तथा प्रासंगिकता सिद्ध कर चुके है। अम्बेडकर द्वारा कही गयी यह बात भविष्यवाणी होती है, "जब भी आर्थिक तथा नैतिक मूल्यों के बीच संघर्ष होगा, तो जीत हमेशा आर्थिक मूल्यों की होगा।

अब आवश्यकता इस बात की है कि हमें अम्बेडकर की मूर्तियाँ स्थापित करने के साथ-साथ उनके विचारों को आत्मसात करना होगा।

"रोशनी का दीप जलाने वाले अंधेरी गुफाओं से निकलना होगा यदि भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है तो अम्बेडकर के विचारों को अपनाना होगा।।"

64

राजस्थान सरकार

डॉ. भीमराव अम्बेड़कर फाउण्डेशन (अम्बेड़कर पीठ),

(सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग)

डॉ. भीमराव अम्बेडकर की स्मृति में संविधान दिवस के अवसर पर राज्य स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता

विषयः– "डॉ. भीमराव अम्बेडकर के आर्थिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता"

दिनांक – 06.04.2022 (समय– 2 घंटा, पूर्णांक– 100 अंक) Rank-II

कार्यालय उपयोग हेतु	मूल्यांकन हेतु
	63

विद्यार्थी का नाम – SHALU MANUAL

पिता का नाम – HARIPRASAD MANUAL

महाविद्यालय / विद्यालय का नाम – SHAHEED CAPTAIN RIPUDAMAN SINGH MOVERMENT COLLEAGE

जिले का नाम – SAWAI MADHOPUR

Scanned with OKEN Scanner

राजस्थान सरकार
डॉ. भीमराव अम्बेड़कर फाउण्डेशन (अम्बेड़कर पीठ),
(सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग)
ग्राम– मूण्डला, पो. रूपवास, तहसील– जमवारामगढ़, जिला जयपुर 302027
E-Mail :- secretaryapj@gmail.com
www.ambedkarfoundationjaipur.in

डॉ. भीमराव अम्बेडकर की स्मृति में संविधान दिवस के अवसर पर राज्य स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता

विषयः– "डॉ. भीमराव अम्बेडकर के आर्थिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता"

दिनांक – 06.04.2022 (समय– 2 घंटा, पूर्णांक– 100 अंक)

कार्यालय उपयोग हेतु	मूल्यांकन हेतु
2801	63

Scanned with OKEN Scanner

डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर के आर्थिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता

(1) **प्रस्तावना** :→ इतिहास बताता है जहाँ नैतिकता व अर्थशास्त्र के बीच संघर्ष होता है, वहाँ जीत हमेशा अर्थशास्त्र की होती है।

—डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर

भारतरत्न डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर जो स्नेह से बाबा साहेब के नाम से जाने जाते हैं, निश्चित ही भारत के यशस्वी सपूतों में से एक हैं। वे एक दलित नेता, समाजसुधारक, राजनीतिक नेता, न्यायविद् होने के साथ-साथ विग्गज अर्थशास्त्री भी थे। उन्हें 'भारत के संविधान के जनक' के रूप में भी जाना जाता है। वे भारत के कमजोर समुदाय के पहले अत्यधिक जटिल बुद्धिजीवी व्यक्ति थे। डॉ॰ अम्बेडकर उन चंद भारतीयों में से एक थे, जिन्होंने सामाजिक आर्थिक प्रजातंत्र का आगाज कर भारतीय इतिहास की धारा को बदलने के लिए लंबी लड़ाई लड़ी।

डॉ॰ अम्बेडकर का कहना था कि, "आर्थिक उत्थान के बिना सामाजिक, राजनीतिक भागीदारी भी संभव नहीं होगी।"

डॉ॰ अम्बेडकर के द्वारा भारतीय मुद्रा की समस्या, ब्रिटिश भारत में प्रांतीय वित्त का विकास, ईस्ट-इंडिया कम्पनी का प्रशासन एवं वित्त, भूमिहीन मजदूरों तथा कृषकों की समस्या, महिलाओं का आर्थिक उत्थान, औद्योगीकरण आदि पर उनके विचार एक समाज-सुधारक एवं आर्थिक दार्शनिशास्त्री के रूप में उनकी पहचान को ईंगित करते हैं, जो यह बताती है कि डॉ॰ अम्बेडकर ने अपने सम्पूर्ण जीवन में एक पेशेवर अर्थशास्त्री के रूप में कार्य करके अर्थशास्त्र को एक विशेष दर्जा प्रदान किया है।

(2) डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर : एक महान अर्थशास्त्री →

डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर एक महान अर्थशास्त्री थे। वे विद्यार्थी जीवन से ही अर्थशास्त्र विषय से बहुत प्रभावित थे। डॉ॰ अम्बेडकर उन पहले भारतीयों में से एक थे, जिन्होंने अपनी औपचारिक शिक्षा अर्थशास्त्र में प्राप्त की थी। उन्होंने अपनी स्नातक से लेकर पीएचडी तक की पढ़ाई अर्थशास्त्र विषय में ही की थी। सन् 1916 में डॉ॰ अम्बेडकर ने 'कोलंबिया विश्वविद्यालय एवं लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स' से अर्थशास्त्र में पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। उन्हें लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से 'मास्टर ऑफ साइंस' की उपाधि प्राप्त की और इसी विश्वविद्यालय से उन्होंने 'द प्रॉब्लम ऑफ रुपी : इट्स ओरिजिन एंड इट्स सोल्यूशन' में P.H.D. की उपाधि प्राप्त की। (1)

उन्होंने अर्थशास्त्र विषय पर तीन विख्यात पुस्तकें लिखी।

(i) भारतीय मुद्रा की समस्या: इसका उद्भव एवं समाधान (1923)
(ii) ब्रिटिश भारत में प्रांतीय वित्त का विकास (1925)
(iii) ईस्ट-इंडिया कम्पनी का प्रशासन एवं वित्त (1916)

(3) डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर के आर्थिक विचार एवं वर्तमान प्रासंगिकता →

डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर आर्थिक क्षेत्र में भविष्य वक्ता थे। उन्होंने अपने विचार उस समय दिये जब देश में सामाजिक आंदोलन का वातावरण

निर्मित था। उनके द्वारा दिये गये आर्थिक विचार वर्तमान में भी प्रासंगिक है, जो इस प्रकार है–

(1) भारतीय मुद्रा की समस्या एवं इसकी वर्तमान प्रासंगिकता →

सन् 1923 में प्रकाशित यह पुस्तक 1800-1893 के दौरान विनिमय के माध्यम के रूप में भारतीय मुद्रा के विकास का परीक्षण करती हैं। इस पुस्तक में डॉ. अम्बेडकर ने उपयुक्त मौद्रिक - व्यवस्था के चयन की समस्या की व्याख्या की तथा इसमें उन्होंने बताया कि कैसे व किस प्रकार स्वर्ण मानक के संदर्भ में भारतीय मुद्रा का अवमूल्यन हुआ। इसके लिए उन्होंने सुझाव दिया कि स्वर्ण मानक के संदर्भ में मुद्रा का मूल्य स्थिर रखा जाये। उन्होंने तर्क दिया कि सरकार की नोट छापने की शक्ति सीमित होनी चाहिए, क्योंकि सरकार असीमित नोट छापकर मुद्रा के मूल्य को ~~स्थिर~~ बनाए कर देगी। उन्होंने कहा कि सरकार को घाटे को विनियमित किया जाना चाहिए एवं धन का एक व्यवस्थित प्रवाह होना चाहिए।

वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था मुद्रा अवमूल्यन और मुद्रास्फीति की समस्या से जूझ रही हैं। ऐसे में उनके शोध के परिणाम महत्वपूर्ण साबित हो सकते हैं।

डॉ. अम्बेडकर के प्रयासों के फलस्वरूप ही भारत में 1 अप्रैल 1935 को भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना हुई। अब तक भारत में रिजर्व

बैंक के 19 क्षेत्रीय कार्यालय हैं, जिनका कार्य नोटों के निर्गम को नियंत्रित करना, मौद्रिक स्थायित्व रखना, मुद्रा व ऋण प्रणाली का परिचालन करना है।

अभी हाल ही में हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने डॉ. अम्बेडकर के 125 वें महापरिनिर्वाण दिवस पर 10 रुपये का सिक्का जारी किया। उन्होंने अम्बेडकर की इसी पुस्तक के आधार पर 500 व 1000 मूल्य-वर्ग की मुद्राओं को समाप्त करके भारतीय अर्थव्यवस्था को विनियमित करने की कोशिश की। उन्होंने सुझाव दिया कि हर 10 साल में एक बार छोटी सूचना अवधि के माध्यम से मुद्रा को बदलकर मुद्रास्फीति एवं काले धन की समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है।

(2.) ब्रिटिश भारत में प्रांतीय वित्त का विकास एवं वर्तमान प्रासंगिकता। →

सन् 1925 में प्रकाशित इस पुस्तक में डॉ० अम्बेकर ने बताया कि सरकार को सार्वजनिक वित्त का उचित उपयोग करना चाहिए। सरकार को जनता से प्राप्त धन का इस्तेमाल न केवल नियमों, कानूनों एवं अधिनियमों के अंतर्गत करना चाहिए बल्कि उनसे प्राप्त किये धन के एक-एक रुपये का हिसाब-किताब रखा जाना चाहिए। इसके अंतर्गत उन्होंने तीन प्रकार के बजटों जैसे:- 'असाइनमेंट द्वारा बजट', 'आवंटित राजस्व द्वारा बजट', 'साझा राजस्व द्वारा बजट' आदि पर

चर्चा की और यह धारणा भी व्यक्त की कि सामूहिक उत्तरदायित्व इन तीनों में सामंजस्य स्थापित करने वाली शक्ति है।

डॉ० अम्बेडकर जी के इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप भारत में वित्त-आयोग की स्थापना हुई, जिसकी नियुक्ति प्रत्येक 5 वर्ष में एक बार की जाती है। यह आयोग केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार के मध्य वित्त का विभाजन करता है। अब तक भारत में कुल 14 वित्त आयोगों का गठन किया जा चुका है। अतः सार्वजनिक वित्त के क्षेत्र में जो डॉ० अम्बेडकर ने विचार दिये हैं, वह आज भी प्रासंगिक हैं।

(3) ईस्ट-इण्डिया कम्पनी का प्रशासन एवं वित्त ⟶

सन् 1916 में डॉ० अम्बेडकर द्वारा रचित यह पुस्तक 1792-1858 के दौरान ईस्ट-इण्डिया के प्रशासन तथा वित्त में आर्थिक परिवर्तन की ऐतिहासिक समीक्षा प्रदान करती है।

इसमें उन्होंने बताया कि कैसे ब्रिटिश शासकों ने सार्वजनिक वित्त हेतु भारतीय नागरिकों का शोषण किया, जो लोकतांत्रिक दृष्टि से उचित नहीं है और इस हेतु लोगों से जबरन वित्त वसूलना किसी भी स्थिति में उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि ब्रिटिश सरकार अपने बजट का अधिकांश भाग सेना पर व्यय करती है, जो कि राष्ट्र के व्यापक हित में नहीं है। ब्रिटिश सरकार द्वारा अपने

बजट का 45% से 65% तक सेना पर व्यय करती है। इस हेतु वह भारत में भूमि करों में 54% तक वृद्धि करती है जबकि इंग्लैण्ड में यह कर राशि मात्र 10% ही है। यह ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों पर किया गया अत्याचार ही तो है। सरकार द्वारा अपने बजट का अधिकांश भाग जनता के विकास कार्यों में व्यय करना चाहिए न कि सेना पर।

वर्तमान में भारत सरकार द्वारा अपने बजट का अधिकांश भाग सेना पर व्यय किया जाता है। सैनिकों को स्वयं उनके जीवनकाल में तथा मृत्यु उपरांत उनके परिवारजनों को अनेक सुविधाएँ तथा मासिक भत्ते प्रदान किये जाते हैं। तीनों सेनाओं (जल, थल, वायु) के करीब 25 लाख भूतपूर्व सैनिक हैं, जिनकी पेंशन पर सरकार अच्छा खासा व्यय करती है। अतः डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्वारा दिया गया यह विचार वर्तमान में पूर्ण रूपेण प्रासंगिक नहीं है।

(4.) <u>महिलाओं का आर्थिक उत्थान एवं वर्तमान प्रासंगिकता</u> ⟶

डॉ० अम्बेडकर ने अपने आर्थिक विचारों में 'महिलाओं के आर्थिक उत्थान' को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया। उनका कहना था कि महिलाएँ जो सदियों से पुरुषों द्वारा हेयनीय तथा उपेक्षित जीवन व्यतीत करती आ रही है, उनकी आर्थिक स्थिति को ऊँचा करना अति आवश्यक है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि महिलाओं की खराब आर्थिक स्थिति के कारण राष्ट्र की आर्थिक प्रगति बाधित हो रही है। अतः

महिलाओं की आर्थिक स्थिति को ऊँचा उठाने एवं उनके देश की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए उनका आर्थिक उत्थान अति आवश्यक है।

डॉ० अम्बेडकर का कहना था कि, "मैं एक समुदाय की डिग्री को, प्रगति की उस डिग्री से मापता हूँ, जिसे केवल महिलाओं ने हासिल किया है।"

वर्तमान में स्वतंत्र भारत में महिलाएँ डॉक्टर, इंजीनियर, मंत्री तथा अन्य प्रशासनिक पदों पर सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं। महिलाओं के द्वारा अनेक उन्नत व्यवसायों को संचालित किया जा रहा है। सरकार द्वारा महिलाओं के लिए अनेक योजनाएँ जैसे- फ्री सिलाई मशीन योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, समर्थ योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ आदि चलायी जा रही हैं। किंतु आज भी महिलाओं की स्थिति उस कटी हुई पतंग के समान है, जिसकी एक डोर पुरुषों के हाथ में है।

(5) डॉ० अम्बेडकर के श्रम-सुधार कार्य एवं वर्तमान प्रासंगिकता →

डॉ० अम्बेडकर भारत की वायसराय कार्यकारिणी में 'श्रम सदस्य' थे। 'श्रमिक आंदोलन' को बढ़ाने में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके द्वारा श्रम-सुधार के क्षेत्र में किये गये उल्लेखनीय कार्य इस प्रकार है -

(i) डॉ० अम्बेडकर ने 'इण्डीपेंडेंट लेबर पार्टी का गठन' किया जिसमें

उन्होंने 'किरायेदारी कानून', 'इन्डी-स्ट्राइक बिल', 'खोटी बिल' आदि की खुलकर आलोचना की और उन्होंने श्रमिकों के लिए अनेक मांगे रखी। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि मजदूरों को भी सत्याग्रह का अधिकार होना चाहिए। उन्होंने मजदूरों तथा अछूतों में भी आर्थिक जागृति फैलायी। इसके लिए डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर ने 'मूकनायक', 'बहिष्कृत भारत', 'जनता' जैसे अखबारों का प्रकाशन शुरू किया। उन्होंने दलितों को अपने पैतृक व्यवसायों को छोड़कर उन्नत व्यवसाय अपनाने के लिए प्रेरित किया।

(ii) उन्होंने श्रमिकों की समस्याओं को सुलझाने हेतु रोजगार दफ्तरों की स्थापना भी की। उन्होंने 'लेबर अफसरों' की भी नियुक्ति की।

(iii) श्रमिकों की तकनीकी शिक्षा की जिम्मेदारी सरकार ने अपने ऊपर ली।

डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर के उपयुक्त सभी श्रम-सुधार कार्य वर्तमान में भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने कि उस समय थे। वर्तमान में श्रमिकों और दलितों को अनेक सुविधाएँ दी जा रही हैं, जैसे:- श्रमिकों की भर्ती प्रक्रिया में सुधार, काम के घंटों का निश्चित होना, कार्यों की शर्तों में कमी, सवैतनिक अवकाश, उचित पारिश्रमिक।

वर्तमान में जितने भी श्रम-सुधार कानून बनाये हैं वह डॉ॰ अम्बेडकर के ही अथक प्रयासों के परिणाम हैं।

(6) भारतीय कृषि की समस्या पर उनके विचार एवं वर्तमान प्रासंगिकता →

डॉ भीमराव अम्बेडकर ने कृषि की समस्या पर निम्न सुझाव दिये —

(i) भारत में छोटी जोत और उनका उपचार → डॉ० अम्बेडकर का कहना था कि भारत में छोटी जोत इसलिए समस्या नहीं है कि वह छोटी, बल्कि वह इसलिए समस्या है क्योंकि वह वर्तमान अर्थव्यवस्थाओं की आवश्यकता से मेल नहीं खाती। जोतों के खंडित हो जाने और इकड़ों में बँटने की समस्या का एक ही इलाज है कि जमीनों की चकबंदी की जाये।

(ii) डॉ० भीमराव अम्बेडकर उद्योगों के राष्ट्रीयकरण के पक्ष में थे। उनका कहना था कि उद्योगों को सरकारी आधिपत्य में स्थापित किया जाना चाहिए, जिससे किसानों को अधिक से अधिक लाभ हो।

(iii) डॉ० अम्बेडकर कृषि योग्य भूमि के राष्ट्रीयकरण के पक्ष में थे। उनका कहना था कि, "खेत उसी का हो जो खेती करे।"

डॉ० अम्बेडकर द्वारा कृषि के क्षेत्र में दिये गए विचार पूर्णरूपेण प्रासंगिक है। वर्तमान में अनेक कृषि नीतियाँ चलायी जा रही है। सरकार रेडियो और टीवी के माध्यम से अनेक कार्यक्रम (कृषि-दर्शन

प्रस्तुत करती है, जिससे किसान वैज्ञानिक पद्धति को अपनाकर अपना मुनाफा बढ़ा सके।

अभी हाल ही में किसान आंदोलन की शक्ति देखने को मिली। किसानों के एक साल का संगठित संघर्ष रंग लाया और सरकार को तीनों कृषि कानूनों को वापस लेना पड़ा।

(7) आर्थिक न्याय एवं वर्तमान प्रासंगिकता → डॉ. अम्बेडकर आर्थिक न्याय के पक्षधर थे। उनका कहना था कि आर्थिक विषमताओं का अंत होना चाहिए। जिससे अमीर और गरीब के बीच चौड़ी खाई न हो। आर्थिक न्याय से संबंधित प्रावधानों को नीति - निदेशक तत्वों में स्थान दिया गया। जिसमें भारत-राज्य में आर्थिक न्याय के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अनेक कदम उठाये गये हैं।

(8) कराधान एवं जल संसाधन नीति एवं वर्तमान प्रासंगिकता →

(1) कराधान नीति →

डॉ० अम्बेडकर ऐसे करों के विरोध में थे, जो समाज के गरीब वर्ग को प्रभावित करते हो। उनके अनुसार प्रत्येक देश की सरकार द्वारा उस प्रकार के कर लगाने चाहिए, जिससे की करदाताओं को सुविधा हो, इसके लिए उन्होंने एक शब्द दिया वह था 'कराधान क्षमता'। आज वर्तमान में जो कर - नीति संचालित है वह

(iii) जल संसाधन नीति → डॉ० अम्बेडकर सिंचाई एवं बिजली परियोजना समिति के अध्यक्ष थे। उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता के आधार पर दामोदर नदी परियोजना, हीराकुण्ड नदी परियोजना, सोन-नदी जैसी परियोजना का निर्माण किया और आज भारत में जितनी भी बहुउद्देश्यीय नदी घाटी परियोजनाएँ चलायी जा रही है और आज जिस प्रकार से हम बिजली तथा पानी की सुविधाओं का उपभोग कर रहे हैं वह उन्हीं के ही अथक प्रयासों का परिणाम है।

(4) **उपसंहार** ⟶ अंततः यह कहा जा सकता है कि डॉ० भीमराव अम्बेडकर अन्य सभी उपमाओं के साथ महान अर्थशास्त्री भी थे। जिन्होंने एक व्यक्ति से लेकर पूरे भारतवर्ष के आर्थिक हितों के संरक्षण को प्राथमिकता दी। वे भारतीय अर्थव्यवस्था को एक न्यायसंगत अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करना चाहते थे। २०वीं सदी के प्रारम्भ में विश्व के सभी प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने डॉ० अम्बेडकर की अर्थशास्त्र विषय की समझ एवं उनके योगदान को सराहा एवं महत्वपूर्ण टिप्पणी भी की।

अभी हाल ही में प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने कहा था कि,

Scanned with OKEN Scanner

"डॉ० अम्बेडकर अर्थशास्त्र के विषय में मेरे पिता हैं।"

संभवतः ऐसा लगता है यदि डॉ अम्बेडकर ने अर्थशास्त्र विषय को अपनाया होता वे दुनिया के दस प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों में से एक होते, लेकिन उनका योगदान किसी भी अर्थशास्त्री से कहीं ज्यादा है, उनके द्वारा किये गये आर्थिक कार्य वर्तमान में प्रासंगिक है, जो सदैव अविस्मरणीय रहेंगे। अगर हमारे देश के आर्थिक नीतिकार डॉ० अम्बेडकर के आर्थिक विचारों को अपनाये तो भारत विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना सकता है।

इसी संदर्भ में डॉ० अम्बेडकर ने कहा था कि, " मेरे विचारों की सार्थकता तभी होगी, जब लोग स्वयं के पथ-प्रदर्शक बनेंगे, स्वयं के कारणों की शरण में रहे, किसी दूसरे के सामने आत्मसमर्पण न करें, सत्यवादी बनें और सत्य की शरण में रहे।" मुझे विश्वास है कि आपके निर्णय गलत नहीं होंगे।

हम डॉ० अम्बेडकर के आर्थिक विचारों को आत्मसात करें, जिससे हमारा समाज और अर्थतंत्र सुदृढ़ हो सके।

63

राजस्थान सरकार

डॉ. भीमराव अम्बेड़कर फाउण्डेशन (अम्बेड़कर पीठ),

(सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग)

डॉ. भीमराव अम्बेडकर की स्मृति में संविधान दिवस के अवसर पर राज्य स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता

विषयः– "**डॉ. भीमराव अम्बेडकर के आर्थिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता**"

दिनांक – 06.04.2022 (समय– 2 घंटा, पूर्णांक– 100 अंक)

कार्यालय उपयोग हेतु	मूल्यांकन हेतु
Rank - III	61

विद्यार्थी का नाम – HARSHITA SHARMA

पिता का नाम – PARMANAND SUROLIYA

महाविद्यालय / विद्यालय का नाम – SMT. MOHARANI TAPARIA KANYA MAHAVIDYALAYA JASWANTGARH

जिले का नाम ..... NAGAUR

Scanned with OKEN Scanner

Dr. B. R. Ambedkar Foundation, Jaipur

राजस्थान सरकार
डॉ. भीमराव अम्बेड़कर फाउण्डेशन (अम्बेड़कर पीठ),
(सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग)
ग्राम– मूण्डला, पो. रूपवास, तहसील– जमवारामगढ़, जिला जयपुर 302027
E-Mail :- secretaryapj@gmail.com
www.ambedkarfoundationjaipur.in

डॉ. भीमराव अम्बेडकर की स्मृति में संविधान दिवस के अवसर पर राज्य स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता

विषयः– "डॉ. भीमराव अम्बेडकर के आर्थिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता"

दिनांक – 06.04.2022 (समय– 2 घंटा, पूर्णांक– 100 अंक)

college

कार्यालय उपयोग हेतु	मूल्यांकन हेतु
2401	61

"डॉ. भीमराव अम्बेडकर के आर्थिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता"

रूपरेखा →

(1) प्रस्तावना
(2) डॉ. अम्बेडकर का आर्थिक पक्ष
(3) अम्बेडकर के अनुसार अर्थव्यवस्था का स्वरूप
(4) अम्बेडकर के आर्थिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता
(5) उपसंहार

(1) प्रस्तावना →

यह सही बात है कि डॉ. अम्बेडकर की छवि के साथ मुख्यतया सामाजिक व राजनीतिक पृष्ठभूमि के विचार अधिक जुड़े हुए है। परन्तु ऐसा नहीं था कि अम्बेडकर आर्थिक व्यवस्थाओं की तरफ विचारशील नहीं थे। अम्बेडकर का शुरुआती झुकाव अर्थशास्त्र व अर्थव्यवस्था की तरफ ही था। उन्होंने इस विषय से संबंधित अपने शोध व स्तम्भ रचनायें प्रकाशित की, जो आज के समय में भी अपनी प्रासंगिकता को थामे हुए है तथा कहीं ना कहीं बाबा साहेब के अस्तित्व को बरकरार रखे हुए है।

Scanned with OKEN Scanner

सामान्यतः ऐसा लग सकता है कि यदि अम्बेडकर केवल अर्थशास्त्र को ही अपना करियर बनाया होता तो वे संभवतया अपने समय में दुनिया के दस प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों में से एक होते। लेकिन बाबा साहेब का योगदान एक अर्थशास्त्री से कहीं ज्यादा है।

"बाबा तेरी कलम ने क्या खूब किया चमत्कार है,
भारत देश को हर तरफ से दिया पूर्ण आकार है।"

अम्बेडकर की छवि यदि एक अर्थशास्त्री के रूप में नहीं बन पायी तो इसका कारण यह है कि 1923 में भारत लौटने के बाद वे भारत की सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों को सुधारने में लग गये और अर्थशास्त्र व अर्थव्यवस्था पर अपने शोध जारी नहीं रख पाये।

(2) <u>डॉ० अम्बेडकर का आर्थिक पक्ष</u> →

अम्बेडकर का युग देश और दुनिया के लिए भारी उथल-पुथल का दौर था।

Scanned with OKEN Scanner

अम्बेडकर ने अपने जीवन में रूसी क्रान्ति, द्वितीय विश्व-युद्ध व भारत औपनिवेशिक - विरोधी संघर्ष जैसी युगान्तकारी घटनाओं को देखा। उन्होंने यह भी देखा कि किस प्रकार यूरोपीय ज्ञानोदय ने भारत के इतिहास, राजनीति व शासन कला को प्रभावित किया है।

अर्थशास्त्र अम्बेडकर का पसंदीदा विषय था। विद्यार्थी जीवन से ही अम्बेडकर अर्थशास्त्र विषय से प्रभावित थे। उन्होंने अपनी स्नातक से लेकर पीएचडी तक की पढ़ाई अर्थशास्त्र विषय में ही की तथा अपने शोध प्रकाशित किये।

स्मॉल होल्डिंग्स इन इंडिया एण्ड देयर रेमेडीज (1918), द एवोल्यूशन ऑफ प्रोविंशियल फाइनेंस इन इंडिया (1915), एडमिनिस्ट्रेशन एण्ड द फाइनेंस ऑफ द ईस्ट इंडिया कम्पनी (1915) जैसे शोध-प्रबंध और डीएससी की थीसीस 'द प्रॉब्लम ऑफ द रुपी- इट्स ओरिजन एण्ड इट्स सोल्यूशन (1923) प्रकाशित किये जो आर्थिक क्षेत्र में उनकी गहन रुची, समझ व दूरदर्शिता को परिलक्षित करती है।

अम्बेडकर अर्थशास्त्र के तकनीकी अध्ययन के हामी

नहीं थे। वे सांख्यिकी विश्लेषण पर आधारित व्यावहारिक व तार्किक वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने के पैरोकार थे।

वे आँकड़ो का उपयोग कर यह सिद्ध करना चाहते थे कि पूँजी और पूँजीगत माल की कमी ही निम्न उत्पादकता का कारण है। 1925 में आयोजित ईस्ट इंडिया कम्पनी ने भारत की मुद्रा प्रणाली पर अध्ययन करने के लिए एक आयोग की स्थापना की। इस आयोग में जो 40 अर्थशास्त्री शामिल थे उनमें से एक डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर भी थे।

1920 के दशक में अम्बेडकर के लेखन से वे एक उदारवादी अर्थशास्त्री प्रतीत होते है जबकि 1930 के दशक में वे दलितों, श्रमिकों और मजदूरों के सामाजिक पक्ष में हो गये और उन पर मार्क्सवाद का प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा। वे मार्क्सवाद से जीवन भर प्रभावित रहे।

Sep. 1942 में वॉयसराय की एक्ज्यू एक्जिक्यूटिव कौंसिल में अम्बेडकर को श्रम सदस्य के रूप में शामिल किया गया।
" अम्बेडकर जी को दो ही चीजों से लगाव था मात्र, एक ओर था भारत देश दूसरी ओर था अर्थशास्त्र।"

अर्थशास्त्र
उनके
(3). अम्बे
भारत
स्थापि
व
आ

Scanned with OKEN Scanner

इस प्रकार हम कह सकते है कि अम्बेडकर की अर्थशास्त्र के प्रति गहन रुची व श्रद्धा - भावना थी, जो कि उनके शोधों में स्पष्टतया देखी जा सकती है।

(3). अम्बेडकर के अनुसार अर्थव्यवस्था का स्वरूप →

अम्बेडकर भारतीय अर्थव्यवस्था को एक न्यायसंगत अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करना चाहते थे, जिसमें समानता हो, गरीबी, मंहगाई व बेरोजगारी खत्म हो, सामाजिक न्याय हो तथा लोगों का आर्थिक शोषण न हो।

अम्बेडकर के अनुसार भारत के पिछड़ेपन का मुख्य कारण भूमि - व्यवस्था के बदलाव में देरी है, इसका समाधान लोकतांत्रिक समाजवाद है, जिससे आर्थिक कार्यक्षमता व उत्पादकता में वृद्धि होगी और जो ग्रामीण क्षेत्रों का कायापलट करने में संभव होगा। आर्थिक विवरों के आधार पर अम्बेडकर अहस्तक्षेपवाद व वैज्ञानिक समाजवाद के पक्षधार नहीं थे।

अम्बेडकर जहाँ उत्पादकता में वृद्धि तथा धन संचय

के पक्ष में थे, वहीं सम्पति के आधार पर उनके विचार 'सतर्क सकारात्मका' पर आधारित थे। उन्होंने कहा था कि समस्या सम्पत्ति में नहीं बल्कि सम्पत्ति के असमान वितरण में है। अम्बेडकर के अनुसार सम्पत्ति के वितरण में सामानता के पक्ष को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

अम्बेडकर के अनुसार "उपभोग्य सामग्री के संदर्भ के रूप में रूपये की कीमत स्थिर होनी चाहिए। आम लोगों के लिए कीमती धातुओं की कीमत का उतना महत्व नहीं है जितना उनके रोजमर्रा के इस्तेमाल की वस्तुओं और सेवाओं का है।

अम्बेडकर के मत में यदि अपेक्षाकृत समृद्धि के दौर में भी सरकार अपने राजकोषीय व शासकीय उत्तरदायित्वों को पूरा करने में संसाधन नहीं जुटा पाती है तो इसके लिए स्वयं सरकार जिम्मेदार होगी।

अम्बेडकर के अनुसार भारत की कृषि संबंधी समस्याओं का सबसे अच्छा उपाय है औद्योगीकरण। अम्बेडकर ने

बड़े उद्योग लगाने की वकालत की और साथ ही कृषि को भी समाज की रीढ़ की हड्डी माना। उन्होंने कहा कि औद्योगिक क्रांति के साथ-साथ कृषि को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि मात्र कृषि से ही भारत की बढ़ती हुई आबादी को भोजन व उद्योगों को कच्चा माल मिलता है। जब भारत देश तेजी से विकास कर रहा होगा तब कृषि वह नींव होगी जिस पर आधुनिक भारत की ईमारत खड़ी होगी। कृषि भारत की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का मूलभूत आधार है।

अम्बेडकर के अनुसार सम्मिश्र कार्यपालिकाएँ, विभाजित उत्तरदायित्व, शक्तियों का बंटवारा, कार्यों का विभाजन आदि से कभी उत्तम शासन व्यवस्था का निर्माण नहीं होता और जहाँ शासन व्यवस्था अच्छी नहीं होती वहाँ कि व्यवस्था अच्छी होने की आशा ही नहीं की जा सकती।

अम्बेडकर ने मुद्रा मूल्य की स्थिरता को अत्यंत आवश्यक माना। अम्बेडकर के विचार में समाज की आय दो ही चीजों पर निर्भर करती है - (1) किये गये प्रयास (2) सम्पत्ति के उपयोग।

Scanned with OKEN Scanner

बाबा साहेब ने भारत के संविधान में नियंत्रक व महालेखा परीक्षक के पद का औचित्य बताते हुए कहा कि सरकारें जनता से मिले संचित धन के व्यय में विवेकशीलता, बुद्धिमत्ता और मित्तव्ययिता से काम लें। अम्बेडकर के अनुसार सरकारी धन की आवश्यकता इसलिए होती है कि सड़के, कानून व व्यवस्था जैसी मूल आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके तथा इनका लाभ कुछ लोगों तक सीमित न होकर सभी को मिले। बाबा साहेब के मतानुसार सरकारी धन से संबंधित कार्य क्तिीय विवेक, गहरी समझ और अनुभवशीलता व समालोचनात्मक विश्लेषण पर आधारित होना चाहिए। सरकारी धन का व्यय इस प्रकार किया जाना चाहिए कि उसके पाई-पाई का सम्पूर्ण लाभ व विवरण दिया जा सके। यह बात छोटे से छोटे से लेकर बड़े से बड़े संस्थान में लागू होनी चाहिए।

अम्बेडकर कृषि क्षेत्रों के पुनर्गठन के लिए क्रांतिकारी कदम उठाने के पक्षधर थे।

अम्बेडकर ने श्रमिकों व दलितों पर भी अपना ध्यान आकर्षित किया और उन्होंने कहा कि मेरी समझ

में भारत के श्रमिकों को केवल दो ही शत्रुओं से मुकाबला करना है, ये दो शत्रु है- ब्राह्मणवाद और पूंजीवाद

बाबा साहेब ने भारतीय संविधान में अनुच्छेद 36 से अनुच्छेद 51 तक नीति निर्देशक तत्वों का भी प्रावधान रखा जो भविष्य में सरकार को आर्थिक आधार पर देश को मजबूत बनाने में मुख्य मददगार के रूप में रहेंगे।

"भविष्य की परिस्थितियों पर भी बाबा साहेब की दृष्टि,
उस महान पुण्यात्मा का गुणगान करती है सारी सृष्टि।"

(4). <u>अम्बेडकर के आर्थिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता</u> →

अम्बेडकर का एक प्रसिद्ध कथन है कि "एक विचार को प्रसार की उतनी ही आवश्यकता होती है जितनी एक पौधे को पानी की आवश्यकता होती है, नहीं तो दोनों मुरझाएंगे और मर जायेंगे।" इसी तथ्य के आधार पर बाबा साहेब द्वारा वर्षों पहले दिये हुए विचार वर्तमान तक अपनी

Scanned with OKEN Scanner

प्रासंगिकता और महत्ता को बनाये हुए है।

डॉ. अम्बेडकर ने भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में व्यावहारिक शोध व विचार प्रकाशित किए। जब तक शोध अनुप्रयोग न हो तब तक उस शोध की सामाजिक उपयोगिता संभव नहीं है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपने आर्थिक विचारों के आधार पर भारतीय अर्थव्यवस्था को आमूल बदलकर नये आयाम साबित किये।

डॉ. अम्बेडकर ने औद्योगीकरण का समर्थन, नदी घाटी परियोजनाओं की शुरुआत, खनिज सम्पदा का विकास व संविधान में नीति निर्देशक तत्वों को जोड़कर भारतीय अर्थव्यवस्था में मूलभूत आर्थिक परिवर्तन किये।

यदि अम्बेडकर जैसे लोग भारतीय अर्थव्यवस्था के शीर्ष पर होते तो शायद पिछले 16 वर्षों में 2,50,000 किसानों ने आत्महत्या न की होती। उन्होंने कृषि क्षेत्रों के पुनर्गठन व राष्ट्रीयकरण का समर्थन किया। उन्होंने कृषि को भारत की रीढ़ की हड्डी माना। वर्तमान समय

में भारतीय कृषि में लगातार विकास हो रहा है जो बढ़ती हुई जनसंख्या को खाद्यान्न उपलब्ध कराने व भारी मात्रा में उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध कराने में समर्थ है। वर्तमान समय में भारत देश अनेकों कृषि उत्पादों के उत्पादन में प्रथम स्थान पर है तथा बड़ी मात्रा में कृषि उत्पादों का निर्यात करने में भी समर्थवान राष्ट्र बन रहा है।

अम्बेडकर ने भारतीय रिजर्व बैंक का खाका तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वित्त आयोग की अभिकल्पना, रूपरेखा, कार्यशैली व नियम- उपनियम सभी कुछ बाबा साहेब की शोध 'द प्रॉब्लम ऑफ द रुपी- इट्स ओरिजन एण्ड इट्स सोल्यूशन पर आधारित है।

अम्बेडकर द्वारा सरकारी धन के व्यय करने हेतु सुझाये गये विवेकशीलता, बुद्धिमता और मित व्ययिता के मूलभूत नुस्खे वर्तमान समय में प्रासंगिक है। यही सरकार के धन व्यय करने के तरीके के लिए उपयोग में लिये जाने चाहिए।

अम्बेडकर के अनुसार सरकारी धन के व्यय के

Scanned with OKEN Scanner

व्यय के संबंध में व्यक्तिगत हितों को संज्ञान में नहीं लाना चाहिए। परन्तु वर्तमान समय में अधिकतर सरकारी कर्मचारी व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति के पश्चात इस उपयोग सार्वजनिक कार्यों में करते है जिसके कारण भारत देश में भ्रष्टाचार व काले धन जैसी समस्यायें आकार ग्रहण कर रही है जो काफी हद तक भारतीय अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित करती है।

अम्बेडकर वस्तुओं के संबंध रुपये की कीमत के स्थिर रहने के पक्ष में थे। परंतु वर्तमान समय में पेट्रोल डीजल व अन्य आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में बढ़ोतरी होने के कारण ये कहीं ना कहीं सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में होने वाली गिरावट का कारण भी बनती है। सकल घरेलू उत्पाद में कमी स्वाभाविक तौर पर देश की अर्थव्यवस्था को काफी हद तक प्रभावित करती है।

अम्बेडकर सम्पत्ति के असमान वितरण के पक्षधर नहीं थे परन्तु वर्तमान समय की स्थिति के अनुसार 10% लोगों के पास 90% सम्पत्ति है जबकि 90% जनता के पास मात्र 10% और सम्पत्ति के असमान वितरण की यह स्थिति लगातार विकास

कर रही है तथा अपनी चरम सीमा को प्राप्त कर रही है

डॉ. आम्बेडकर द्वारा संविधान में प्रस्तावित नीति निर्देशक तत्व वर्तमान समय में भी राज्य सरकारों व केन्द्र सरकार को शासन व्यवस्था के कार्य में मुख्य मार्गदर्शक के तौर पर अपना महत्व कायम रखे हुए है।

आम्बेडकर का कथन है कि "जब भी आर्थिक व नैतिक मुद्दों के बीच टकराव होता है तो जीत हमेशा आर्थिक मुद्दों की होती है।" यह विचार वर्तमान में सर्वाधिक प्रासंगिक है वर्तमान समय में मनुष्य में नैतिकता का पतन जितनी शीघ्रता के साथ हो रहा है उससे भी कही अधिक शीघ्रता से आर्थिक पक्ष मजबूत व कुछ स्वार्थी होता जा रहा है।

बाबा साहेब के अनुसार शासकीय तथा क्षितिय कार्यों को विषय की गहन समझ तथा अनुभवशीलता के आधार पर किया जाना चाहिए। वर्तमान समय में युवा वर्ग (गहन समझ) व प्रौढ़ वर्ग (अनुभवशीलता) के आपसी तालमेल को बढ़ाकर देश को नये प्रगति पथ पर अग्रसर करने के प्रयास किये जा रहे है।

Scanned with OKEN Scanner

साथ ही साथ शिक्षा व्यवस्था में सुधार, तकनीकी व प्रौद्योगिकी क्षेत्र में प्रशिक्षण, खनिज सम्पदा व अन्य संसाधनों में आत्मनिर्भरता के आधार पर बाबा साहेब द्वारा बताये मार्गों का अनुसरण कर देश को आगे बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है।

बाबा साहेब ने भारत में दामोदर नदी घाटी परियोजना की शुरुआत करके बहु-उद्देशीय परियोजनाओं की आधारशिला तैयार की, जो वर्तमान समय में निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर है।

इन सभी के अलावा भारतीय संविधान में प्रस्तावित नियंत्रक व महालेखापरीक्षक का पद वर्तमान समय तक अपनी उपयोगिता, महत्ता तथा प्रासंगिकता को बनाये हुए है। इस प्रकार हम कह सकते है कि भारतीय अर्थव्यवस्था व वित्तीय पक्ष के संबंध में बाबा साहेब ने जो विचार आज से वर्षों पूर्व दिये थे वे अभी तक अपनी प्रासंगिकता तथा बाबा साहेब ओजस्विता को बरकरार रखे हुए है। बाबा साहेब के विचारों की प्रासंगिकता इस बात से भी सिद्ध होती है कि ये विचार वर्तमान समय में "न्यू इंडिया" की संकल्पना को साकार करने में भी मददगार है।

(5) उपसंहार →

स्पष्टतः अम्बेडकर स्वचालित मौद्रिक प्रणाली के जरिए रुपये की कीमत को स्थिर रखने के पक्ष में थे। इसलिए हमें ऐसी चलनिधि की आवश्यकता है जो भारत देश को विकसित व आत्मनिर्भर बना सके। अम्बेडकर ने अर्थव्यवस्था के जिन गुणों का वर्णन किया है वे हमारे अधिकतर संस्थाओं में नहीं है। अतः हमें व्यक्ति के तौर पर, संस्थाओं के हिस्से के तौर पर और अंततः राष्ट्र के तौर पर अपने आर्थिक पक्ष को मजबूत करना होगा ताकि हम उस अंधे कुएं से निकल सके जिसके कारण हमारे संस्थान विवेकशीलता व मितव्ययता का उपयोग करने में असमर्थ लग रहे है।

"बाबा साहेब अम्बेडकर देश की शान है,
हर देशवासी के हृदय में विराजमान है।
देश और दुनिया के लिए किये कई बड़े काम है,
हमारे बाबा साहेब अम्बेडकर महान है।"

(6)